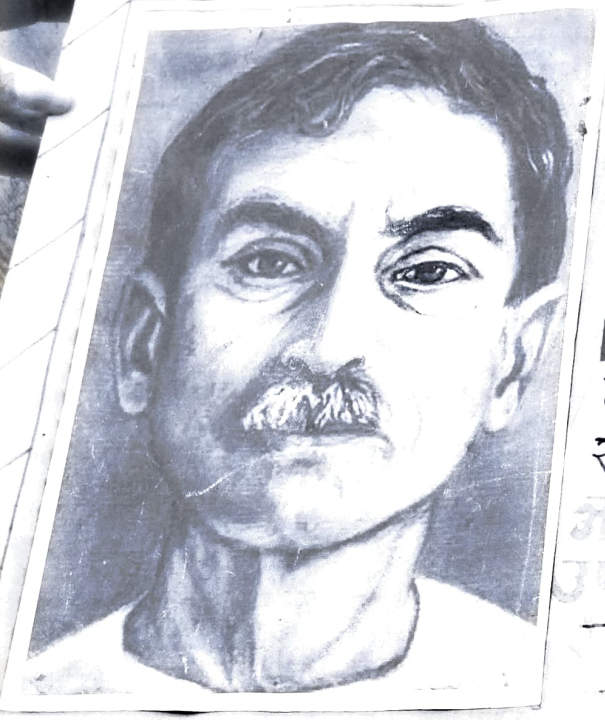

प्रेमचंद

जन्म :- सन् १८८० में बनारस के पास लमही गाँव में

नाम :- धनपतराय । लेखकीय नाम -: मुन्शी प्रेमचंद

शिक्षा :- बी.ए. तक की शिक्षा व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की

विशेषता :- कृषकों की आवाज, नारी जाति की महिमा के वकील, गरीबों के महत्व के प्रचारक और सच्चे समाजसुधारक थे ।

अवसान :- सन् १९३६ में ।

उपन्यास :- सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, ___, ___ ___ ___, ___, ___ ___ ___, ___, ___, ___ ।

कहानी संग्रह :- ४०० कहानियाँ लिखी। मानसरोवर के आठ भागो में संकलित हैं।

नाटक :- संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी ।

जीवनी :- महात्मा शेख सादी, दुर्गादास एवं कलम - तलवार और त्याग।

साहित्य का उद्देश्य ।

सन् १९३० में "हंस" का प्रकाशन एवं संपादन ।

सृष्टि का आरंभ, अहंकार, न्याय, सूरदास, हड़ताल, टालस्टाय की कहानियाँ ।

टी.वाय बी.ए २०१८-१९

पारगी किरीट डी

પ્રા. ઈશ્વર રાઠવા
હિતેશ પ્રજાપતિ
એસ.વાય.બી.એ.

: સંપાદક મંડળ :

પ્રા. અજય રાવલ
વિશાલ સોલંકી
એસ.વાય.બી.એ.

: आहिरे :

सवा शताब्दी वर्ष : वन्दना

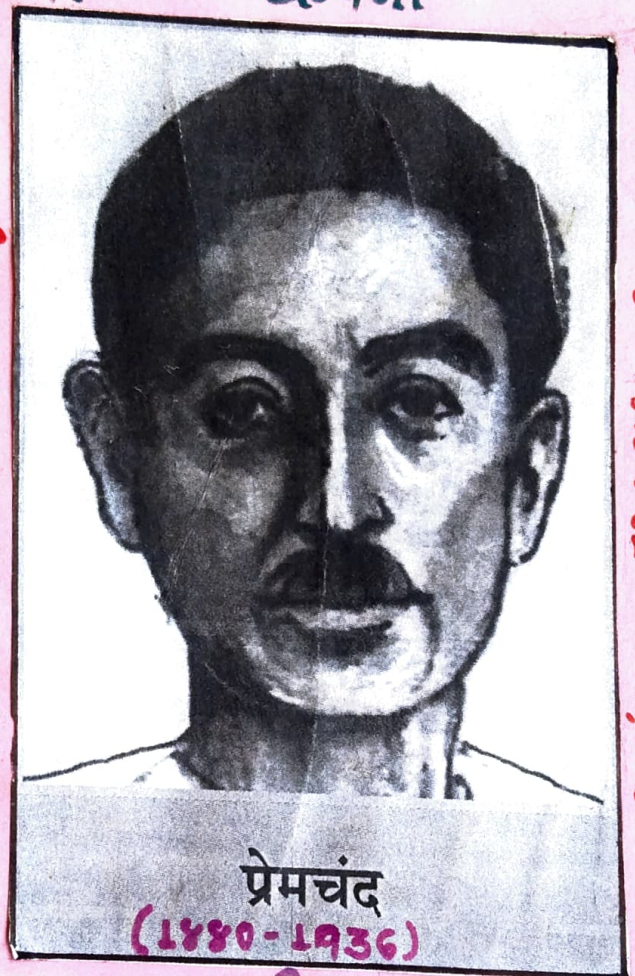

प्रेमचंद
(1880-1936)

प्रेमचन्दजी का असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। काशी के निकटवर्ती गाँव लमही में सन १८८० में उनका जन्म हुआ था। प्रेमचन्दजी ने मेट्रिक तक ही शिक्षा प्राप्त कर एक अध्यापक के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन प्रारंभ कर दिया। बाद में पारिवारिक दायित्व का भार उठाते हुए इन्टर और बी.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। संपूर्ण जीवनकाल में आर्थिक विषमताओं से जूझते हुए भी प्रेमचन्दजी ने श्रेष्ठ साहित्य-सृजन किया। प्रारंभ में वे नवाबराय के नाम से उर्दू पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे। फिर उन्होंने प्रेमचन्द के नाम से लिखना शुरू किया। सन १९३६ में प्रगतिशील लेखक संघ के सभापति चुने गये। साहित्य रचना के साथ-साथ प्रेमचन्दजी ने 'मर्यादा', 'माधुरी', 'जागरण' और 'हंस' नामक पत्रिकाओं का सफल संपादन भी किया।

•कृतित्व•

•कहानी संग्रह :- मानसरोवर, सप्तसरोज, नवनिधि, प्रेम द्वादशी, प्रेम-पूर्णिमा, प्रेम पच्चीसी, प्रेम प्रतिमा, प्रेम गंगा, प्रेमतीर्थ, प्रेमप्रसून, अग्निसमाधि नामक कहानी संग्रह। •उपन्यास :- वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान और मंगल-सूत्र। •नाटक :- प्रेम की वेदी, कर्बला, संग्राम

प्रगतिशील 'लेखक संघ' के 1936 में आयोजित प्रथम अधिवेशन के अध्यक्षीय उद्बोधन का अंश :- "हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासीता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर केवल वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधिनताका भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।"

1911 में सतलखा गाँव (बिहार)

नाम :– वैद्यनाथ मिश्र, लेखकीय नाम :– नागार्जुन

शिक्षा :– काशी में विश्वविद्यालय से संस्कृत व्याकरण के साथ उत्तीर्ण हुए

विषेशता :– समाज के दुःख से हमेशा बेचैन और व्यथित रहते थे। तथा उन्हें मैथिली, संस्कृत, अपभ्रंश, सिंहली, तिब्बती, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी आदि भाषा की रचनाओं में माहिर थे

1. **काव्य** :– युगधारा, शपथ, प्रेत, खून और शोले, चनाजोर गरम, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तलाब की मछलियाँ, पुरानी जूतियों का कोरस, खिचड़ी भस्मांकुर, पत्रहीन नग्नगाछ, विप्लव देखा हमने,

2. **अनुवाद** :– मेघदूत, गीतगोविंद, विद्यापति के गीत, बंग्ला, गुजराती, संस्कृत की दर्जनों कृतियाँ आदि का हिन्दी में अनुवाद।

3. **उपन्यास** :– रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक, हीरक जयंती, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, इमरतिया

4. **लघु प्रबन्ध** :– एक व्यक्ति : एक युग (निराला के विषय में)।

5. **गद्य संग्रह** :– अन्नहीनं क्रियाहीनम्।

6. **कहानी संग्रह** :– आसमान में चंदा तैरे।

T.Y.B.A

2028-29